① प्रत्यक्ष

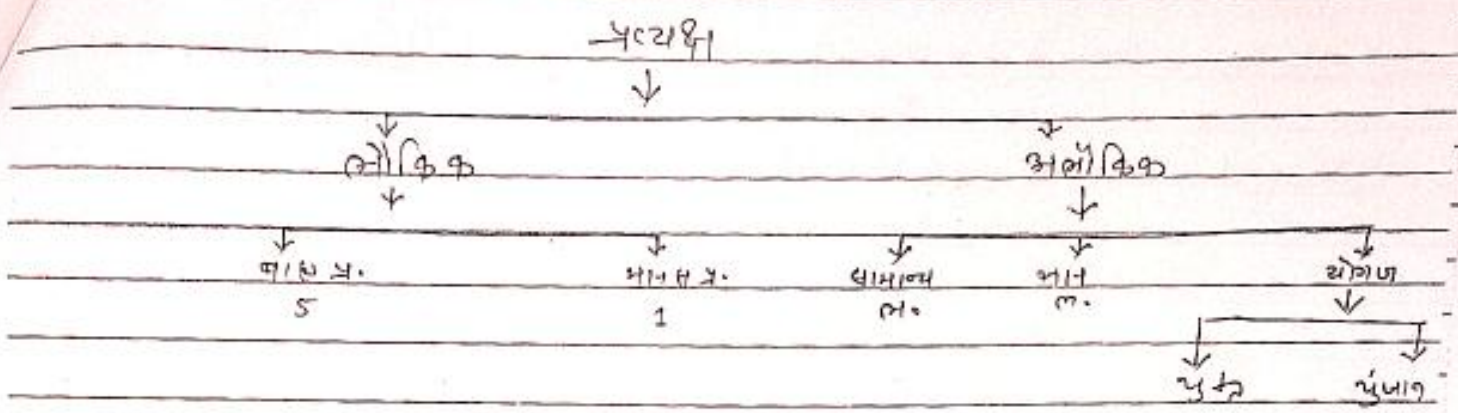

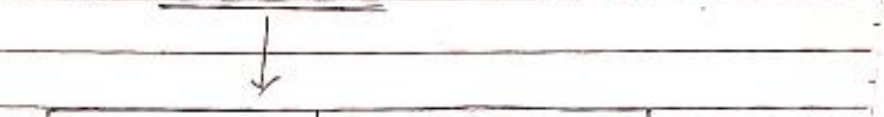

प्रत्यक्ष
- लौकिक
  - बाह्य प्र. 5
  - मानस प्र. 1
- अलौकिक
  - सामान्य ल.
  - ज्ञान ल.
  - योगज
    - युक्त
    - युंजान

→ एक अन्य दृष्टिकोण से '<u>लौकिक प्रत्यक्ष</u>' के प्रकार —
- निर्विकल्पक
- सविकल्पक
- प्रत्यभिज्ञा

- <u>प्रत्यक्ष</u> — इन्द्रियों एवं विषयों के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं।
  or "इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानं प्रत्यक्षम्"

→ प्रत्यक्ष के लिए <u>तीन बातों</u> का होना आवश्यक है: —
(i) इन्द्रिय —
(ii) विषय —
(iii) सन्निकर्ष —

- <u>लौकिक प्रत्यक्ष</u> — जब इन्द्रियों का वस्तु के साथ साधारण सम्पर्क होता है।
- <u>अलौकिक प्रत्यक्ष</u> — जब इन्द्रियों का वस्तु के साथ असाधारण ढंग से सम्पर्क होता है।
- <u>बाह्य प्रत्यक्ष</u> - 5

आँख से - रूप का - चाक्षुष प्रत्यक्ष Ex- फूल लाल है
कान से - शब्द का - श्रौत प्रत्यक्ष Ex- संगीत का धुन
नाक से - गंध का - घ्राणज प्रत्यक्ष Ex- फूल की खुशबू का ज्ञान
जीभ से - स्वाद का - रासन प्रत्यक्ष Ex - मिठाई के मीठास का ज्ञान
त्वचा से - स्पर्श का - स्पर्श प्रत्यक्ष Ex - लोहे के कड़ापन का ज्ञान

- <u>मानस प्रत्यक्ष</u> - मन के द्वारा आन्तरिक अनुभूतियों का ज्ञान
  Ex- सुख-दुःख का ज्ञान

एक अन्य दृष्टि से प्रत्यक्ष का विभाजन — (3)

निर्विकल्पक प्रत्यक्ष — जिसमें वस्तु के अस्तित्व का आभास होता है।

सविकल्पक प्रत्यक्ष — जिसमें वस्तु निश्चित एवं स्पष्ट ज्ञान होता है।

प्रत्यभिज्ञा (Recognition) — पहचानना अर्थात भूत काल में देखी हुई वस्तु को वर्तमान काल में पुनः देखने पर यदि हम पहचान जाते हैं तो उसे प्रत्यभिज्ञा कहते हैं।

अलौकिक प्रत्यक्ष : —

सामान्य लक्षण ज्ञान — जिस प्रत्यक्ष से जाति का प्रत्यक्ष होता है।
Ex- मनुष्य से सभी मनुष्य का राम,श्याम, आदि

ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष — जब इन्द्रिया अपने विषय के साथ अन्य इन्द्रियों के विषय के गुण का ज्ञान प्राप्त कर लेता है।
Ex — गुलाब के रूप एक गंध का ज्ञान

योगज — स्वयं समाधि की अवस्था में योगियों द्वारा प्राप्त भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञान है।

— योगज के प्रकार —

पूर्णता युक्त — जो योगी समाधि के द्वारा या साधना के द्वारा पूर्णता को प्राप्त कर लेते हैं या शाश्वत ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।

अपूर्णता युंजान — जो योगी पूर्ण ज्ञान नहीं प्राप्त कर पाते हैं, जिन्हें आंशिक सिद्धि प्राप्त होता है।

* योगज ज्ञान को भारतीय दर्शन में —
जैन — केवल ज्ञान मानते हैं
बौद्ध — बोधि " "
वेदान्त — साक्षात्कार योगज प्रत्यक्ष मानते हैं।

Ques 1.13

सन्निकर्ष (Sense contact) के छः भेद निम्न है -

(1) संयोग - जब इन्द्रिय और वस्तु के बीच साक्षात (बिना किसी माध्यम के) सन्निकर्ष होता है, तो उसे संयोग सम्बन्ध कहा जाता है। Ex- आँख से रूप का ज्ञान

(2) संयुक्त समवाय - इसमें इन्द्रिय का सीधा सम्बन्ध वस्तु के साथ न होकर एक माध्यम के द्वारा होता है।
Ex- घड़े की लालिमा का ज्ञान, यहाँ लालिमा का ज्ञान घड़े के माध्यम से होता है।

(3) संयुक्त समवेत समवाय - इसमें इन्द्रिय का वस्तु से साथ सम्बन्ध दो माध्यमों के द्वारा होता है।
Ex- घड़े की लाली की जाति लालपन का ज्ञान प्राप्त करने के लिये आँखों का साक्षात सम्बन्ध घड़े से होता है।
फिर घड़े का सम्बन्ध लाली से होता है
फिर यह लाली जिसकी जाति लालपन से संबंधित है।

(4) समवाय - इसमें इन्द्रिय का सन्निकर्ष उस चीज वस्तु से होता है जिसमें शब्द, एक गुण के रूप में इन्द्रिय में समवेत हो जाता है।
Ex- कर्णेन्द्रिय द्वारा शब्द का प्रत्यक्षीकरण होना।

(5) समवेत समवाय - शब्द में उसकी जाति (शब्दत्व) समवेत रहती है।
Ex- कर्णेन्द्रिय का शब्दत्व से संबंधित होना।

(6) विशेषण विशेष्यभाव - जब हम किसी वस्तु के अभाव का प्रत्यक्ष करते हैं तब स्वतः अभाव नहीं दिखाई देता है। प्रत्यक्ष के साथ मिला हुआ कोई न कोई आधार दिखाई देता है।
Ex- घड़ा नहीं है - घर आने के बाद हमें पता चलता है कि भूतल पर घड़े का अभाव है।
यहाँ भूतल - विशेष्य है और घड़े का अभाव - विशेषण।

लिंग – हेतु – धुआँ
लिंगी – साध्य – आग

* लिंगपरामर्श – जहाँ लिंग और लिंगी / हेतु और साध्य /

लिंग के आधार पर लिंगी का ज्ञान
लिंगी के आधार पर लिंग का ज्ञान

धुआँ और आग दोनों की विद्यमानता रहती है। वहाँ अनुमान नहीं होता। जैसे- वह रसोई घर जहाँ भी हमने लिंग और लिंगी या धुआँ और आग के व्याप्ति नियम को सीखा है, अनुमान का विषय नहीं अपितु प्रत्यक्ष का विषय है। ध्यान रखना है कि अनुमान सिर्फ वहीं होता है जहाँ केवल लिंग / हेतु का प्रत्यक्ष होता है, लिंगी / आग का नहीं। यदि दूरस्थ पर्वत पर हम धुआँ उठता देखते हैं तो वह हमारे अनुमान का विषय बनता है। वहाँ हमें धुआँ प्रत्यक्ष दिखाई देता है आग नहीं। हम धुआँ को देखकर आग का अनुमान करते हैं। धुआँ को देखकर ही हमें यह व्याप्ति याद आई कि

जैसे — जहाँ-जहाँ धुआँ होता है वहाँ-वहाँ आग होती है।
पर्वत पर धुआँ है
∴ पर्वत पर आग है
यह अनुमान का विषय है और यही लिंगपरामर्श है।

→ अनुमान ऐसा ज्ञान होता है जिसके पूर्व कोई ज्ञान आता है। यह दो अनुमिति 'तत्पूर्वकम्' दो प्रकारों का द्योतक है। ये दो प्रत्यक्ष हैं
(1) लिंग-लिंगी संबंध-प्रत्यक्ष
(2) लिंग-प्रत्यक्ष
जैसे- धुआँ को ज्ञान होने पर आग का ज्ञान होना

* लिंग के आधार पर लिंगी का ज्ञान या लिंगी के आधार पर लिंग का ज्ञान लिंगपरामर्श कहलाता है।

लिंग / हेतु / धुआँ / साधन

लिंगी / साध्य / आग